

Padma Shri



SMT. LALITA VAKIL

Smt. Lalita Vakil is a Chamba Rumal Embroiderer. She has been key in reviving the craft and bringing it to the forefront. Her main objective is to preserve, practice and impart the training of this cultural dying form and be the proud ambassador of the Chamba Rumal Embroidery.

2. Born on 14th April, 1954, in a middle class family of the legendary and culturally rich Chamba town of Himachal Pradesh, Smt. Vakil got involved with this art at the age of 14. She learned the skills and techniques of Double-Sided, Do-Rukha Embroidery known as Chamba Rumal, which would have been sadly come to a state of almost extinction, if had not been promoted by such eminent artist like her.

3. Smt. Vakil has immensely contributed to keep alive an almost dying form of art that is a pleasure to adorn. She has been working relentlessly & pricelessly to uplift this art by developing new designs and skill. By doing so, she took the art a step ahead to survive and thrive for the contemporary lifestyle. She created new modern day utility pieces bringing together the perfect blend of old traditional designs pleasingly fused with modern sensibility. She has rightfully contributed to evolve this art form to the need of modern lifestyle. She has exhibited her work in numerous exhibitions in and outside India to promote and preserve the art form of intricate and breathtakingly beautiful embroidery of Chamba Rumals.

4. Smt. Vakil has inspired and helped number of women to learn this craft. She uses her expertise to train younger generations to acquire this rare artistic skill and therefore increase their employment opportunities. Also, she has imparted training to over thousands of women artisans under Guru Shishya Parampara with the support of the Government and on her own initiative. She devoted her entire life for preservation and upliftment of the traditional art form of Chamba by keeping the uniqueness alive.

5. Smt. Vakil has been appreciated and awarded with numerous awards and honours including Nari Shakti Puraskar in 2018; Kala Shri Award twice in 1998 & 2002 and Kala Ratan in 2006.

पद्म श्री



श्रीमती ललिता वकील

श्रीमती ललिता वकील चंबा रुमाल कढ़ाईकार हैं। इस शिल्प को पुनर्जीवित करने और इसे आगे बढ़ाने में उनकी एक अहम भूमिका रही है। उनका मुख्य उद्देश्य विलुप्त हो रही चंबा रुमाल कढ़ाई की इस सांस्कृतिक कला का संरक्षण करना, इसे व्यवहार में लाना, इसका प्रशिक्षण प्रदान करना और इसकी गौरवपूर्ण अग्रदूत बनना है।

2. 14 अप्रैल, 1954 को हिमाचल प्रदेश के पौराणिक और सांस्कृतिक रूप से समृद्ध चंबा शहर के एक मध्यमवर्गीय परिवार में जन्मी, श्रीमती वकील 14 वर्ष की उम्र में इस कला से जुड़ गईं। उन्होंने मशहूर चंबा रुमाल की दोतरफा यानी दो-रुखा कढ़ाई का कौशल और बारीकियां सीखीं। यदि उनके जैसी प्रतिष्ठित कलाकार इसे बढ़ावा नहीं देती तो यह कला दुखद रूप से लगभग विलुप्त होने की कगार पर आ जाती।

3. श्रीमती वकील ने सराहनीय रूप से इस मरणासन्न कला को जीवित रखने में अत्यधिक योगदान दिया है। वह नए-नए डिजाइन गढ़कर और कौशल पैदा करके इस कला के उत्थान के लिए अथक और अमूल्य कार्य कर रही हैं। ऐसा करके, उन्होंने सामयिक जीवन शैली के अनुरूप इस कला को जीवित रखने और पनपने का एक बड़ा कदम उठाया। उन्होंने पुराने पारंपरिक डिजाइनों और आधुनिक कारीगरी के सुंदर मिश्रण से इसे नए जमाने की उपयोगी कला का रूप दिया। उन्होंने, सही मायने में आधुनिक जीवन शैली के जरूरतों के मुताबिक इस कला के प्रोत्साहन में अपना योगदान दिया है। उन्होंने चंबा रुमाल की बारीक और मनमोहक कढ़ाई कला को बढ़ावा देने और संरक्षित करने के लिए देश-विदेश की कई प्रदर्शनियों में अपना काम दर्शाया है।

4. श्रीमती वकील ने इस शिल्प को सीखने के लिए महिलाओं को प्रेरित किया है और उनकी मदद की है। वह युवा पीढ़ी को इस असाधारण कलात्मक कौशल को सिखाने के लिए अपनी दक्षता का प्रयोग करती हैं और ऐसा करके उनके लिए रोजगार के अवसर भी पैदा करती हैं। इसके अलावा, उन्होंने सरकार के सहयोग और अपने प्रयास से गुरु शिष्य परंपरा के तहत हजारों महिला कारीगरों को प्रशिक्षण प्रदान किया है। उन्होंने चंबा की इस अनूठी पारंपरिक कला के संरक्षण और उत्थान के लिए अपना पूरा जीवन समर्पित कर दिया।

5. श्रीमती वकील को अनेक पुरस्कार और सम्मान प्रदान किए गए हैं जिनमें 2018 में नारी शक्ति पुरस्कार; 1998 और 2002 में दो बार कला श्री पुरस्कार और 2006 में कला रत्न पुरस्कार शामिल हैं।